Dr. Sangita Kumari Saha
B.A. D-III (H) VIIth paper.

Frequency Distribution.

परीक्षणों तथा मनोवैज्ञानिक प्रयोगों के आधार पर जो आँकड़े प्राप्त होते हैं, उनसे कोई अर्थ तबतक नहीं निकलता जबतक कि उन्हें एक खास ढंग से व्यवस्थित नहीं कर लिया जाता है। अतः सबसे पहले यह देखना है कि हम प्राप्तांक को किस प्रकार व्यवस्थित तथा समूहन कर सकते हैं ताकि उससे कोई अर्थ आसानी से निकाला जा सके। प्राप्तांको का समूहन हम उसे एक खास ढंग की टेबल में व्यवस्थित करके करते हैं इस सारणी की विशेषता यह है कि इसमें प्राप्तांकों को उनकी आवृत्ति या बारम्बारता के साथ दिखलाया जाता है। आवृत्ति इस बात का सूचक होता है कि प्राप्तांक वितरण में कितनी बार आया है।

जैसे : किसी भी वितरण में यदि प्राप्तांक 60 दो बार आया है तो उसकी आवृत्ति 2 होगी। इस तरह के वितरण जिसमें प्राप्तांकों तथा उनकी आवृत्ति को साथ-साथ दिखलाया जाता है उसे बारम्बारता वितरण या frequency distribution कहते हैं तथा वह Table जो आवृत्ति को दिखलाता है उसे आवृत्ति वितरण सारणी कहते हैं।

प्राप्तांकों को frequency distribution में सारणी बद्ध करने का सबसे सीधा और आसान तरीका इस प्रकार है। माना कि 16 Students को digit span test पर निम्नांकित प्राप्तांक आये।

6	3	2	4
6	3	7	1
2	3	4	3
4	5	6	7

Scanned with CamScanner

अब हमें इन प्राप्तांकों को आवृत्ति वितरण में सारणीबद्ध करना है। चूँकि इन प्राप्तांकों का विस्तार बहुत कम है यानि 1 से 7 तक ही है। अतः इनका सारणीबद्ध इस प्रकार कर सकते हैं। सबसे पहले highest score तथा lowest score मालूम कर लिया जाता है। इसमें उच्चतम प्राप्तांक 7 तथा न्यूनतम प्राप्तांक 1 है। इसके बाद उच्चतम प्राप्तांक से शुरू करके न्यूनतम प्राप्तांक तक के सभी संभावित प्राप्तांकों को decending order में हम इस प्रकार लिख देते हैं — 7, 6, 5, 4, 3, 2, 1। इसके बाद हम यह गिनती कर लेते हैं कि हर प्राप्तांक इस वितरण में कितनी बार आया है और उसे गिनकर उपयुक्त प्राप्तांकों के सामने आवृत्ति के कालम में इस प्रकार लिख देते हैं —

Score	frequency
7	2
6	3
5	1
4	3
3	4
2	2
1	1
	N = 14

यहाँ पर 'N' से तात्पर्य आवृत्तियों की संख्या के कुल योग से होता है।